in March and April, 1967 due to heavy and untimely rains. Reports of partial damage have come only from Punjab, Rapasthan and Uttar Pradesh Governments.

(b) According to the reports of the State Governments concerned, their losses have been estimated by them as *follows:*

Punjab: Estimated total value of loss Rs. 69,29,817.

Rajasthan: Estimated crop damage in quantity 1,50,000 tonnes.

U.P.: Damage by hail-storms estimated over 2,64,141 acres during the period March 13 and March 20 and 11,84,834 acres during the period March 22 and March 31, 1967.

संकर तिलहन का उत्पादन

1599. श्री महाराज सिंह भारती : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने संकर बाजरा तथा संकर मकई की भांति संकर तिलहन उगाने का कोई प्रयत्न किया है;

(ख) यदि हां, तो उसके क्या परिणाम रहे;

(ग) क्या अधिक पैदावार वाले किसी तिलहन की खोज की गई है;

(घ) क्या सरकार ने सोयाबीन "सूरजमुखी" आदि विदेशी तिलहन जो साधारणतः यहां नहीं उगाये जाते हैं, भारत में उगाने के प्रयोग किये हैं, और

(ङ) यदि हां, तो इन प्रयोगों के क्या परिणाम रहे ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अण्णासाहिब शिन्दे) : (क) जी हां। प्रयोगात्मक आधार पर यह तिल के मामले में किया जा रहा है।

(ख) मुख्य तिलहन फसलों में संकर बीजों के कम खर्चीले बड़े पैमाने के उत्पादन को दृष्टि में रखते हुए तिलों की स्थिति संतोषजनक है यह बात संकर-शक्ति की उपयोगिता के लिए महत्वपूर्ण है।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद तथा भतपूर्व भारतीय केन्द्रीय तिलहन समिति के माध्यम से केन्द्रीय सरकार ने 1958 से मद्रास, उत्तर प्रदेश तथा मैसूर राज्यों में संकर तिल के विकास के लिए अनुसन्धान परियोजनाएं संचालित की हैं। इसके अतिरिक्त कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था जैसी केन्द्रीय संस्था भी इस कार्य में लगी हुई है। इन अनुसन्धान गतिविधियों के फलस्वरूप उन्नत हाइब्रिड्स का विकास हुआ है। उदाहरण के लिए मद्रास में स्थानीय उन्नत किस्मों तथा रूसी किस्मों के बीच हाइब्रिड्स ने मूल की अपेक्षा 14 से 29 प्रतिशत अधिक उपज दी है। 1000 से 1300 कि० ग्राम प्रति हैक्टेयर के बीच उपज हुई है।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में हाइब्रिड सम्मिश्रण जिससे 1400 से 2000 कि० ग्राम प्रति हैक्टेयर उपज होती है का विकास हुआ है। संकर बीजों के बड़े पैमाने के उत्पादन को सरल बनाने के लिए पौद किस्मों को जो 100 प्रतिशत "पिस्टीलेट" (समस्त मादा पुष्प) हैं हैदराबाद में भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था के प्रादेशिक अनुसन्धान केन्द्र द्वारा तथा अन्य राजकीय विभागीय प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित किया गया है। इस खोज से संकर बीजों का सस्ता उत्पादन सम्भव हो सकता है और ऐसी आशा है कि बड़े पैमाने पर संकर तिलों की खेती करना भविष्य में सम्भाव्य होगा। लिनसीड में संकर बीजों के उत्पादन सम्बन्धी अनुसन्धान भी किए जा रहे हैं।

सरसों के बीजों के मामले में संयोगात्मक किस्मों का भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था

में विकास किया जा रहा है। सीमित रूप में ये भी 'संकर' बीजों को नियोजित करेंगे।

(ग) जी हां। केन्द्रीय तथा राज्यों के कृषि विभागों में कार्य करने वाले वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न तिलहन फसलों की कुछ अधिक उपज वाली किस्मों को विकसित किया गया है। अब तक मूंगफली की लगभग 43 लिन-सीड की 27 तिलों की 21 सेसामम की 17 सरसों के बीज की 25 और सैफ फलावर तथा निगर की तीन-तीन उन्नत किस्में हैं। किसानों में इन उन्नत किस्मों की बड़ी मांग है।

(घ) और (ङ). भारत में 'सनफलावर' तथा सोयाबीन उगाने के लिए परीक्षण किये जा रहे हैं और भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था के प्लान्ट इन्ट्रोडक्शन डिवीजन के माध्यम से विदेशी किस्मों को प्रयोग में लाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

सोयाबीन के मामले में मैदानों और पहाड़ी क्षेत्रों में खेती के लिए कुछ उन्नत किस्मों की सिफारिश की गई है। हाल ही में देश के विभिन्न केन्द्रों में सोयाबीन पर अनुसन्धान कार्य करने के लिए एक समन्वित परियोजना स्वीकृत की गई है। जहां तक 'सनफलावर' का सम्बन्ध है वाणिज्य सम्बन्धी खेती की अवस्था अभी नहीं आई है।

Housing Accommodation for I.A.C. Employees

1699. Shri Mangalathumadom:
Shri A. Sreedharan:
Shri P. Viswambharan:
Shri Kameshwar Singh:

Will the Minister of Tourism and Civil Aviation be pleased to state:

(a) whether there is any scheme for providing housing accommodation to employees of the Indian Airlines Corporation; and

(b) if so, when the scheme will start operating?

The Minister of Tourism and Civil Aviation (Dr. Karan Singh): (a) and (b). The Indian Airlines have a scheme for providing housing accommodation for their employees at Bombay, Calcutta, Delhi and Madras. Land for the purpose has already been acquired at Bombay, Calcutta and Madras and plans for the construction of quarters are being finalised. Construction of 56 quarters has already commenced at Calcutta.

In Delhi, undeveloped land south of Ramakrishnapuram was handed over to the I.A.C. on 24-5-67 for construction of staff quarters. Plans are being drawn up for the purpose.

Agricultural Institutes

1691. Shrimati Jyotsna Chanda: Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

(a) whether there is any proposal under consideration to raise the present agricultural Institutes to the status of National Institutes; and

(b) if so, the details thereof?

The Minister of State in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Shri Annasahib Shinde): (a) A proposal to declare the Indian Agricultural Research Institute, New Delhi, the Indian Veterinary Research Institute, Izatnagar (U.P.), and the National Dairy Research Institute, Karnal (Haryana) as institutions of national importance, is under consideration.

(b) The details of the proposal are being worked out. Broadly, it is proposed to confer upon each of these institutes a larger degree of autonomy and to delegate to them higher administrative and financial powers, with the Indian Council of Agricultural Research, New Delhi functioning as the Coordinating Council.